दक्षिण भारत के राज्य (800ई से 1200 ई तक)

- विंध्याचल पर्वत उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच संबंध स्थापित करने का साधन बन गया, यह कथन विशेष रूप से आगे लिखे तीन कारणों से स्पष्ट हो जाता है-
- (i)पहला यह कि दक्षिण भारत के उत्तरी राज्यों ने अपने राज्य अधिकार को गंगा नदी की घाटी तक फैलाने का प्रयत्न किया|
- (ii)दूसरा यह कि दक्षिण भारत के धार्मिक आंदोलन उत्तर भारत में भी लोकप्रिय बन गए|
- (iii) तीसरा यह कि उत्तर भारत के बहुत से ब्राहमण दक्षिण भारत में बस जाने के लिए आमंत्रित किए गए और उनको भूमि प्रदान की गई|

प्रायद्वीप के राज्य

- दक्षिण प्रायद्वीप के राज्य में उत्तरी क्षेत्र का राष्ट्रकूट राज्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण राज्य था जिसने गंगा की घाटी के एक भाग पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया | राष्ट्रकूट बार-बार 2 शक्तिशाली वंशो- प्रतिहारो और पालो-से कन्नौज और उसके आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार पाने के लिए लड़ते रहते थे|
- प्रतिहारो ने पश्चिमी और मध्य भारत में अपना राज्य स्थापित कर लिया था और पालो ने पूर्वी भारत में|
- चोल राजाओं ने तंजौर के आसपास के क्षेत्र तमिलनाडु से अपना शासन आरंभ किया धीरे-धीरे उन्होंने पल्लव वंश के शासक और अन्य स्थानीय शासकों को पराजित करके अपने को शक्तिशाली बना लिया|
- आधुनिक मदुरै क्षेत्र में चोल साम्राज्य के दक्षिण में पांड्य राज्य था तथा पश्चिमी किनारे पर आधुनिक केरल प्रांत में चेर वंश का शासक था| 12वीं शताब्दी तथा इनमें से कुछ का पतन हो गया और इन क्षेत्रों में नवीन राज्य की स्थापना हुई|
- सातवीं शताब्दी के चालुक्य वंश से संबंध रखने वाले एक वंश ने राष्ट्रकूटो के राज्य पर अधिकार कर लिया| इतिहासकारों ने इस वंश को उत्तर चालुक्य वंश कहा है बाद में यादव वंश के शासकों ने उत्तर चालुक्य वंश के शासकों को पराजित करके अपना राज्य स्थापित कर लिया और देवगिरी(महाराष्ट्र मे आधुनिक दौलताबाद) से शासन किया| वारंगल (आधुनिक आंध्रप्रदेश)में काकतेय वंश का शासन आरंभ हुआ और आधुनिक मैसूर के निकट होयसल वंश ने अपना राज्य स्थापित कर लिया|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

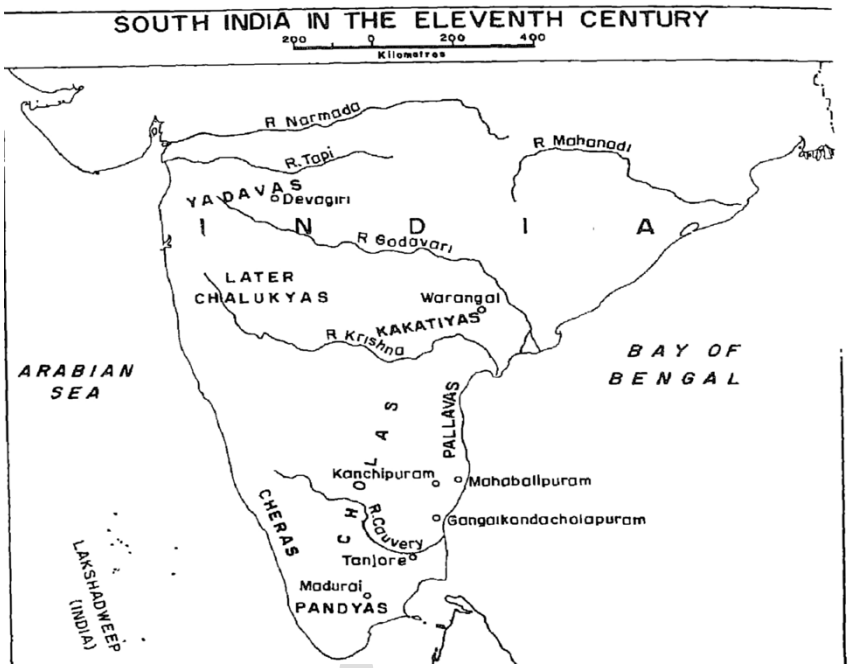

चोल शासक

- परान्तक प्रथम (907-955) ने पांड्य राज्य को जीता और मुदरईकोंडा की उपाधि ग्रहण की| परान्तक ने कृषि कार्य को प्रोत्साहन दिया खेतों की सिंचाई की समस्या दूर करने के लिए बड़े बड़े तालाब खुदवाये जिसमे वर्षा जल को एकत्र किया जा सके और सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया|
- चोल वंश के राजाओं में सबसे उल्लेखनीय राजराज प्रथम और उसका पुत्र राजेंद्र है| राजराज प्रथम(985-1016) एक कुशल सेना संचालक था और उसने पांड्य और चेर वंश के राज्यों पर और मैसूर के कुछ भागों पर भी आक्रमण किये | साथ ही उसने लंका और मालदीप नामक दो द्वीपों पर आक्रमण कर दिया |
- राजराज का पुत्र राजेंद्र सन 1044 ईसवी तक दीर्घकालीन शासन किया| उसने दो युद्ध बड़े ही साहसिक को वीरत पूर्वक लड़े एक तो वह जिसमें उसकी सेनाएं पूर्वी भारत के समुद्र तट से होकर उड़ीसा को पार करती हुई गंगा नदी तक पहुंच गई| दक्षिण लौटने से पूर्व उन्होंने बंगाल के शासन करने वाले पाल वंश के राजा को आतंकित किया राजेंद्र का उत्तर भारत का युद्ध अभियान 700 वर्ष पूर्व किए गए समुद्रगुप्त के दक्षिण भारत के युद्ध अभियान के समान ही था|
- राजेंद्र का दूसरा साहसपूर्ण युद्ध दक्षिण पूर्व एशिया में हुआ था जिसमें उसने सामुद्रिक अभियान किया था| भारतीय जहाजों को मोलक्का की जलसंधि से होकर गुजरना पड़ता

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

था उस समय इस पर श्री विजय का अधिकार था इस राज्य के अंतर्गत मलाया प्रायद्वीप और सुमात्रा का द्वीप भी था| राजेंद्र चोल ने भारतीय जहाजों की सुरक्षा के लिए जल सेना भेज दी और श्री विजय की पराजय हुई|

चोल शासन प्रणाली

- राज्य में राजा सबसे अधिक शक्तिशाली व्यक्ति होता था शासन के विभिन्न विभागों में विशेष अधिकारी होते थे | राज्य का प्रांतों में विभाजन किया गया था इसको मंडलम कहते थे| प्रत्येक मंडलम को कई वलनाडुओं में बाँट दिया गया था | प्रत्येक वलनाडुओं में निश्चित संख्या में गाँव होते थे|
- आरंभ में चोल राज्य की राजधानी तंजौर थी पर बाद में आधुनिक मद्रास के निकट कांचीपुरम को राजधानी बनाया गया|
- बहुत से गांव में शासन का संचालन स्वयं ग्रामवासियों के द्वारा किया जाता था| इन गांव वालों की एक परिषद् होती थी जिसको उर या सभा कहते थे| यह सभा कभी-कभी कई छोटी समितियों में विभाजित कर दी जाती थी और प्रत्येक समिति गांव के शासन के एक-एक अंग की देखरेख करती थी |
- चोल राज्य को आय दो साधनों से प्राप्त होती थी भूमि और भूमि की उपज पर लगाए गए कर से तथा व्यापार कर से| लगान का एक भाग राजा के लिए रख दिया जाता था और शेष भाग सार्वजनिक निर्माण कार्यों जैसे- सड़क और तालाब बनाने, राज्य कर्मचारियों को वेतन देने, स्थल सेना और जल सेना का व्यय वहन करने अथवा मंदिर निर्माण में खर्च किया जाता था|

समाज

- राजा, राजदरबार और दरबारियों के अतिरिक्त अन्य श्रेणी के लोग थे जिनका समाज में अत्यधिक सम्मान किया जाता था, ये ब्राह्मण और व्यापारी थे | ब्राह्मणों को इसलिए आदर किया जाता था कि वे धार्मिक कृत्यों को करते थे और विद्वान थे उनको राजा से भूमि और ग्राम उपहार में मिलते थे|
- चोल राज्य में व्यापारी बड़े संपन्न थे | उनका चीन, दक्षिण पूर्वी एशिया और पश्चिम एशिया के साथ व्यापार होता था इसके अतिरिक्त उनका विशाल भारत के अनेक प्रांतों से भी व्यापार होता था तथा उत्तर-दक्षिण राज्यों के बीच वस्तुओं का आदान प्रदान होता

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

था कुछ व्यापारी मिलकर एक व्यापार मंडल बना लेते थे जिसको मणिग्रामम् कहा जाता था|

मंदिर

- चोल राजाओं के बनवाए हुए मंदिर बहुत वैभवशाली तथा भव्य थे, जैसे तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर|
- पल्लव काल में मंदिर चट्टानों को काटकर बनाये गए थे| मद्रास के निकट महाबलीपुरम में इस प्रकार के मंदिर सबसे अधिक सुंदर हैं|
- चोल राज्यों का मंदिर सामाजिक कार्य का केंद्र भी बन गया था| वह केवल पूजा करने का धार्मिक स्थान ही नहीं था बल्कि एक ऐसा स्थान था जहां लोग मिलते जुलते थे| दीवारों को मूर्तियों से सजाया जाता था इन मूर्तियों के द्वारा देवता और मनुष्य दोनों के दृश्य चित्रित किए जाते थे | दीवारों पर बने हुए इन दृश्यों में राजदरबार, युद्ध, पूजा-उपासना तथा संगीत और नृत्य के दृश्य होते थे |

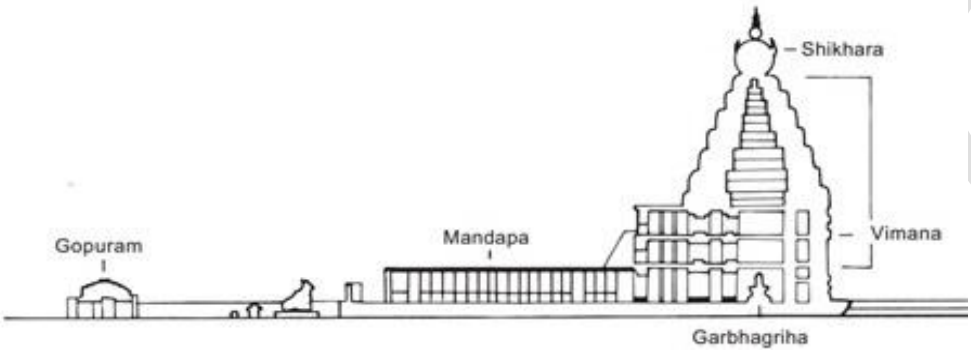

शिक्षा

- मंदिर के प्रांगण में ही विद्यालय लगता था| विद्यार्थी प्रायः ब्राहमण होते थे और वे दो भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करते थे जिनमें एक भाषा संस्कृत होती थी और दूसरी तमिल|
- चोल राजाओं के अनेक शिला-लेख संस्कृत और तमिल दोनों भाषाओं में लिखे हुए हैं| इस काल में दक्षिण भारत में केवल इसी एक भाषा का प्रयोग नहीं होता था| आंध्र प्रदेश में स्थानीय जनसमुदाय द्वारा तेलुगु भाषा का प्रयोग किया जाता था|
- अपनी श्रेष्ठ साहित्यिक रचनाओं के कारण कवि पंप,पौन्न और रन्न, कन्नड़ साहित्य के तीन रत्न कहे जाते है|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

धर्म

- इस काल में अनेक विद्वानों ने दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखलाई प्रसिद्ध दार्शनिकों ने दक्षिण भारत में अपने दार्शनिक सिद्धांतों का प्रचार किया पर उनके सिद्धांतों का ज्ञान भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों को हो गया महात्माओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध थे |
- शंकर जो आठवीं शताब्दी में हुए थे, उनका दर्शन अद्वैत सिद्धांत कहलाता है, जिसका अर्थ है विश्व मे केवल एक सत्ता है|
- रामानुजन का जन्म 11वीं शताब्दी में हुआ उन्होंने उपदेश दिया कि व्यक्ति को भक्ति भाव से अपने को पूर्ण रूप ईश्वर की शरण में छोड़कर उसकी उपासना करनी चाहिए|

gradeup

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now